Sukhdev - 23 Aug.

Q- The Arya Samaj "did not; however, succeed in capturing the imagination of modern India as a whole." Comment. (10M)

उत्तर- आर्य समाज भारत में 19वीं शताब्दी के सामाजिक - धार्मिक सुधार आन्दोलनों में पुनरुत्थानवादी (Revivalist) धारा का प्रतिनिधित्व करता है जिसका प्रसार प्राय: पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया में हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसके तहत सबसे प्रामाणिक भारतीय धार्मिक ग्रन्थों के रूप में वेदों की सत्ता का उल्लेख किया तथा हिन्दू धर्म को सभी वेद- ~~पूर्व~~ पश्चात बुराइयों जैसे- मूर्ति पूजा, ब्राह्मण - पुरोहित आधिपत्य वाले कर्मकाण्डी धर्म, बाल विवाह, ~~छुआ~~ छुआछूत, जाति प्रथा से मुक्त कराने का प्रयास किया। हालांकि इसके बावजूद, आर्य समाज आधुनिक भारत में आने वाले प्रबोधन, तर्क जैसे अनेक विचारों को आत्मसात ना कर सका तथा इसकी सीमाओं ने इसे पूर्ण रूप से आधुनिक भारत में आत्मसात करने में बाधा का कार्य किया। ये सीमाएं हैं-

1- सुधारवाद (Reformism) से अधिक सांस्कृतिक श्रेष्ठतावाद (Cultural Chauvinism) पर बल

2- जाति प्रथा, छुआछूत की निन्दा किन्तु चार वर्णों की व्यवस्था का समर्थन तथा इस तरह भारतीय सामाजिक संगठन की बुनियाद को यथावत रखना।

3- आक्रामक सुधारवाद ने रूढ़िवादी हिन्दुओं, यहाँ तक कि ब्रह्मवादियों को नाराज किया जबकि 'सांस्कृतिक श्रेष्ठतावाद' ने पाश्चात्य समर्थक कहलाता वर्ग को इससे दूर रखा।

4- इनके द्वारा तर्क का प्रयोग पुराणों तथा बहुदेववाद, आदि की निन्दा करने में किया गया किन्तु वैदिक काल में विद्यमान असमानताओं की ओर ध्यान नहीं दिया।

5- विशेषकर दयानन्द की मृत्यु के बाद आर्य समाज आन्दोलन अधिक आक्रामक होता गया। विशेषकर 1890 के बाद चलाये गये शुद्धि आन्दोलन, गौ-रक्षा आन्दोलन के चलते यह सुधारवाद (Reformism) से निर्णायक सीमा तक हटकर पुनरुत्थानवाद (Revivalism) पर पहुँच गया।

यद्यपि आर्यसमाजों के संवादों पर पाश्चिमी प्राच्यवाद प्रभाव (Western Orientalist touch) को अनदेखा करना

Scanned by CamScanner

कठिन है जिसके तहत उन्होंने हिन्दू धर्म को ईसाइयत व इस्लाम के समान एक ग्रन्थकेन्द्रित धर्म के रूप में पेश करने की कोशिश की, बुद्धि व विज्ञान के पाश्चात्य बौद्धिक संवाद को पूर्णत: आत्मसात किया किन्तु आर्य समाजियों के केवल वेदों में ही वैज्ञानिक सत्य के दावे ने इनको ईसाइयत व इस्लाम के विरुद्ध खड़ा कर दिया जिसका ब्रिटिश उपनिवेशवाद में एक महत्वपूर्ण परिणाम साम्प्रदायिकता के विस्तार तथा दंगों के रूप में सामने आया।

Scanned by CamScanner

Q- "Widow Remarriage Act was, in many ways, a logical sequel to the abolition of Sati." comment. [20 M]

उत्तर- 19वीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आन्दोलनों में जिस एक बात पर सबसे अधिक वरीयता दी गयी वह समाज में स्त्री की दशा सुधारने पर था। इसके तहत राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों द्वारा सती प्रथा, ~~कन्या~~ कन्या शिशु वध, विधवा विवाह अनुमति आदि पर कार्य किया गया। हालांकि यह सुधार कई चरणों में दिखता है जैसे_

1- राजाराम मोहन राय द्वारा सती प्रथा पर रोक के लिए आन्दोलन चलाया गया। इससे बड़े पैमाने पर विधवाओं की मृत्यु को रोका जा सका।

2- हालांकि, इससे बेमेल विवाह, कम उम्र में विवाह तथा विधवा हो जाने से स्त्री की दुर्दशा से मुक्ति ना मिल सकी,

3- इसी कारण विधवा पुनर्विवाह के लिए मांग की गयी ताकि बड़े पैमाने पर स्त्रियों के साथ हो रहे अन्याय को रोका जा सके, इसके तहत विशेषकर ईश्वर चन्द विद्यासागर, विष्णुशास्त्री पण्डित,

Scanned by CamScanner

वीरेशलिंगम पंतुलु आदि विधवा - पुनर्विवाह के समर्थन में आन्दोलन किये गये।

हालांकि उक्त प्रयास अधिक सफलता ना मिल सके क्योंकि -

1- सुधारवादी सोच अभी भी अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कुलीनवर्ग के छोटे से दायरे तक सीमित थी

2- अधिकांश सुधार सरकारी कानून द्वारा ऊपर से आरोपित थे, चूंकि सुधारों के प्रति नीचे से आधुनिक सामाजिक चेतना के विकास का प्रयास नहीं हुआ अतः ये सुधार कागजों तक रहे।

3- स्वयं 1856 का कानून सुनिश्चित तौर पर रूढ़िवादी था क्योंकि पुनर्विवाह के पश्चात एक विधवा अपने स्वर्गीय पति की संपत्ति में अधिकार नहीं रहती थी

4- 19वीं शताब्दी में 'स्त्रियों की स्थिति' में सुधार का मुद्दा बड़ी सीमा तक उपनिवेशी काल के एक सभ्यता संबंधी तुलनात्मक संवाद का परिणाम था। इसके तहत जब जेम्स मिल जैसे विद्वानों

में भारत में स्त्री की दशा की हीन दशा का प्रश्न उठाया तो भारतीय समाज सुधारकों द्वारा भी इसके लिए प्रयास किया गया।

वस्तुतः इस संपूर्ण विवाद में स्वयं स्त्रियाँ भागीदारी नहीं थीं तथा उनको अपनी स्वयं की मुक्ति में भी निमित्त कारण (agency) नहीं माना गया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सती के मुद्दे के बाद विधवा पुनर्विवाह का मुद्दा उठना स्वाभाविक ही था। हालांकि इसकी सफलता के लिए वैसी सामाजिक परिस्थिति व स्वीकारोक्ति विद्यमान नहीं थी।

Scanned by CamScanner